

1842

PLATE 111

२२०

विनिविनी कुरु न नृणां दन्तसंनिधिं निगच्छति रुजः । प्रव
 श्वावा न्नामि प्रोक्तं ॥ अथ नृनमूहोक्तं श्री ॥ लोय
 वमही सुने व मही निदमा ॥ ॥ दमा गदि ज
 मुचो कनमि विम जय ॥ ॥ अथ नृनां याव
 न ॥ यज ॥ ॥ ध्यानं य ॥ ॥ य नृन यय ॥ ॥ कि वज
 वाव नृन ॥ ॥ दम कि ॥ ॥ नय वाज ॥ ॥ नि नृन मूह

दुष्टान् दुकार प्रम ॥ ॥ यान् उज्जु न ना ॥ ॥
 नृन क मय वा ॥ ॥ न न मा न क क ॥
 के लो वि म य ॥ ॥ ॥ ॥ प्र व ध्या ॥ ॥ नृना म जय द्र म
 द ॥ ॥ ॥ नृना म जय द्र म
 द यज ॥ ॥ ध्यानं ॥ ॥ नृना म जय द्र म
 वि नृन ॥ ॥ दम ॥ ॥ नृना म जय द्र म

285

[illegible][illegible]

31

इति सक्तु वा मक्ति
इति सक्तु वा मक्ति ॥

28E

[illegible]

272

ली मु काल सिनी विम्वही नवमो वनोर्व व
 यन्म नकां कृ यती नी निरुणी रव कृ न य वनां न नि क य
 न कृ तां मा न नी य लभा स्मि सु स्मि न न रव
 व मु क ल्या व ली ॥ ०० ॥ नि ॥ ॥ अथा या वो म कु
 वा न ॥ उच्छिब्र लव मू द्वा य नर मु लु नि ली नि व
 म्मयी नि न ना र्द वि की ल य म य न न र ॥ १ ॥ मंदा वि न

कार्यन दधन नव । श्री कृष्ण नन्दिय विद्याय नैवा
मना यनि कृदिन ल्पना क । मारु कस्या ना वनदे कया न वि
ह कला ना वल्लु ल्पना
निरु सिद्धि ल्पना मरु य
व उच्छु कृ बा लीनी यद ल ४ समो ॥ ५ ॥ अथ
नव जम न्नी ध्यान ॥ श्री लक्ष्मी विद्याय नैवा

दायिनी ॥ उच्छु कृ बा लीनी यद ल ४ समो ॥ ५ ॥ अथ
प्रदान नो दधि प्रल ॥ यनि कृ द ॥ अथ नैवा मया ज
स नय ना वमि च न ॥ ०० ॥ यो जा कथि ना द विज्ञा कृ यो
महा प्रिती ॥ यम या गु ॥ यो म ज म ज म ज म ज म ज म ज
न ॥ अथ नैवा वल्लु ल्पना विद्या मन्दा दना ल ॥ ०० ॥ अथ
अथ य नैवा विद्या न वान क ल ॥ यो म ज म ज म ज म ज म ज म ज

२२३

मन्त्रं चर्वकं च नो कन्यानां ॥ गजाक्षः द० दा क ह्य काना
ली व ॥ काले ग य नि न ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य
मनि ॥ ४ ॥ समा ॥ ४ ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य
न ॥ ४ ॥ समा ॥ ४ ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य
आदा ॥ ४ ॥ समा ॥ ४ ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य
विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य ॥ ४ ॥ समा ॥ ४ ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य

विद्यावन्दनं कथयिष्ये ॥ ४ ॥ मन्त्रं चर्वकं च नो कन्यानां ॥ गजाक्षः द० दा क ह्य काना
मनुवि ॥ ४ ॥ काले ग य नि न ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य
दनीय ॥ ४ ॥ समा ॥ ४ ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य
न ॥ ४ ॥ समा ॥ ४ ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य
दाम निवर्तनी ॥ ४ ॥ समा ॥ ४ ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य
लकपकदाम न ॥ ४ ॥ समा ॥ ४ ॥ विद्यायां ४ क्रिय के दाम मिल य

१५

कृष्णदिना मंसमादिन ४॥ विन्वयं कुंल साकेन मास न कं वि
नरुन । आदि वन् । लरु सुतु विनज । विन मुरुन ॥ य
कक सुमं रुत्वा न कं वधु सिनानि । इरुग याद व
द वि सौला म सुनवदाय कं ॥ आ नरु का यम ४ दं म
ज दामं कृष्णादि न दिने जवा वृथी । सा यो न म न स द
नमं विसे ॥ वल सत्य व न नरु व दा क र्प ल कृ ४ ॥

कृष्णवृत्ति न ॥ वि वी आ वरु मं व म सिन वि नरु
सद व व वि व न न वा ज व द न व य म ४ ॥ मा । न न व
न न व वी न मा व व ॥ सु व्र ज वि य न
वृत्ति न ॥ कृष्ण गत्य मा स न द
न म व स न क न सिन वि व न व न वि व न सिन व
न म व न व म म व य न ग य म ४ ॥ न न न स व व य

[illegible]

क. ३५. ३५. ३५. ३५. ३५.

विष्णुसहस्रनाम

作爲

नमः पूना सायं

...वत्सलमनयः ॥ ...

बा। ज्ञ. यु. न. क. व. म. न. प. स.

... ५२ ...

...नरकं यदा ...
...सुखं ...

[illegible]

दा. ग. वि. वि. वि. न. ल. व.

...वदन्त्यानी...

... ॥ ३७ ॥

वने कछि न बाँझ बाँझ न कुड्का न मि

नियमो नव ॥ यस्यानि

नमस्तु ॥ ४ ॥

विष्णुमायानां वक्रात् विष्णुमायानां वक्रात्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः ।
वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः ।
वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः ।
वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः ।
वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः ।
वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः । वासुदेवाय नमः ।

[illegible]

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कुरुते वासुदेवाय नमः ॥ विष्णुं नमस्कृत्य भगवते नमः ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रवक्तुमिदं वीर्यं नमः ॥
 यः उच्यते ब्रह्मविद्यायां वासुदेवाय नमः ॥
 वासुदेवाय नमः ॥ सर्वदा शिवं नमस्कृत्य ॥
 कुरुते वासुदेवाय नमः ॥ सुखं नमः ॥

[illegible][illegible]

٦٣

24

